सूरह — एक कहानी

सूरह अल-अहक़ाफ़

रेत के टीले

पूरा सफ़र — वालिदैन, सब्र, और वो बादल जिसने धोका दिया —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 46 • 35 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

कुल अर-अयतुम मा तद'ऊन मिन दूनिल्-लाहि अरूनी माज़ा ख़लकू मिनल्-अर्ज़

4. कहो: भला बताओ जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, मुझे दिखाओ उन्होंने ज़मीन में क्या बनाया?

व वस्सैनल्-इंसान बि-वालिदैहि इह्साना

15. और हमने इंसान को अपने माँ-बाप के साथ भलाई की ताकीद की।

रब्बि औज़िनी अन अश्कुर नि'मतकल्-लती अन्'अम्त 'अलय्य व 'अला वालिदय्य

15. ऐ मेरे रब, मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी उस नेमत का शुक्र करूँ जो तूने मुझ पर और मेरे माँ-बाप पर की।

फ़-लम्मा र-औहु 'आरिज़म्-मुस्तक़्बिल औदियतिहिम क़ालू हाज़ा 'आरिज़ुम्-मुम्तिरुना

24. फिर जब उन्होंने उसे एक बादल देखा अपनी वादियों की तरफ़ आता, तो बोले: ये बादल हम पर बरसने वाला है।

बल हुव मस्त'जल्तुम बिह; रीहुन फ़ीहा 'अज़ाबुन अलीम

24. बल्कि ये वही है जिसे तुम जल्दी माँग रहे थे: एक हवा जिसमें दर्दनाक अज़ाब है।

फ़स्बिर कमा सबर उलुल्-'अज़्मि मिनर्-रुसुल

35. तो सब्र करो जैसा बुलंद-हिम्मत रसूलों ने सब्र किया।

मुझे कुछ दिखाओ जो तुमने बनाया

बेटा, ये सूरह 'हा मीम' से और इस एलान से खुलती है कि ये किताब अल्लाह, 'अल-'अज़ीज़िल-हकीम' — ग़ालिब, हिकमत वाले — की तरफ़ से उतारी गई। और फिर ये तेज़ रफ़्तारी से एक ऐसे चैलेंज पर जाती है जिसका जवाब देना ना-मुमकिन है।

'**कुल अर-अयतुम मा तद'ऊन मिन दूनिल्लाहि अरूनी माज़ा ख़लकू मिनल्-अर्ज़** — **कहो: भला बताओ जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो? मुझे दिखाओ उन्होंने ज़मीन में क्या बनाया** — अम लहुम शिर्कुन फ़िस्-समावात — या उनका आसमानों में कोई **साझा** है?'

बेटा, चैलेंज ख़ूबसूरती से सादा है। **तुम किसी चीज़ को मदद के लिए पुकारते हो — तो मुझे एक चीज़ दिखाओ जो उसने बनाई।** एक चींटी। एक पत्ता। रेत का एक ज़र्रा। **अगर उसने कुछ न बनाया, तो किस बुनियाद पर तुम उस से कुछ माँगते हो?**

'**ईतूनी बि-किताबिम्-मिन क़ब्लि हाज़ा औ असारतिम्-मिन 'इल्मिन इन कुन्तुम सादिक़ीन** — इस से **पहले** की कोई **किताब**, या इल्म का कोई **निशान** मेरे पास **ले आओ**, अगर तुम सच्चे हो।'

बेटा, सबूत का मेयार ग़ौर कीजिए जो अल्लाह माँगते हैं: **या तो नाज़िल-शुदा मतन, या सनद के साथ मुंतक़िल-शुदा इल्म।** *'ये तो हम हमेशा से करते आए हैं'* नहीं। *'सब यही मानते हैं'* नहीं। जज़्बात नहीं। **ये क़ुरआन हमें सिखा रहा है कि एक मज़हबी दावा कैसे क़ुबूल करें** — वही उसूल जिसे हमारे उलमा ने बाद में हदीस के पूरे इल्म में डाल दिया।

'**व मन अज़ल्लु मिम्मंय्-यद'ऊ मिन दूनिल्लाहि मल्-ला यस्तजीबु लहू इला यौमिल्-क़ियामह** — और उस से ज़्यादा गुमराह कौन जो अल्लाह के सिवा उन को **पुकारता** है जो **क़ियामत तक** उसे **जवाब नहीं दे सकते** — **व हुम 'अन दु'आ-इहिम ग़ाफ़िलून** — और वो उनकी पुकार से **बे-ख़बर** हैं?'

बेटा, ये क़ुरआन की सब से तन्हा तस्वीर है: **एक आदमी साल-दर-साल एक ऐसी चीज़ को पुकारता जो जानती तक नहीं कि वो पुकार रहा है।** और उस से बुरा: 'व इज़ा हुशिरन्-नासु कानू लहुम अ'दा-अंव्-व कानू बि-'इबादतिहिम काफ़िरीन — और जब लोग जमा किए जाएँगे, **वो उनके दुश्मन होंगे**, और उनकी इबादत का **इनकार** करेंगे।'

एक दुआ के लिए तीस साल

और अब, बेटा, वो हिस्सा जो इस सूरह का ख़ज़ाना है — **और हर बेटे और बेटी को इसे याद कर लेना चाहिए।**

'**व वस्सैनल्-इंसान बि-वालिदैहि इह्साना** — और हमने इंसान को अपने

वालिदैन के साथ **भलाई** की **ताकीद** की।'

बेटा, '**इह्सान**' — सिर्फ़ इताअत नहीं, सिर्फ़ सहारा नहीं: **एहसान।** फ़र्ज़ से ज़्यादा करना, और उसे ख़ूबसूरती से करना।

और फिर अल्लाह एक वजह देते हैं — और वो **माँ** का पहलू चुनते हैं: '**हमलत्हु उम्मुहू कुरहंव्-व वज़-अ'त्हु कुरहा** — उसकी **माँ** ने उसे **मुश्किल** से **उठाया** और **मुश्किल** से **जना** — **व हम्लुहू व फ़िसालुहू सलासून शह्रा** — और उसका **उठाना** और **दूध छुड़ाना तीस महीने** है।'

बेटा, उस लफ़्ज़ '**कुरहन**' के साथ बैठिए — मुश्किल से, तकलीफ़ से, जिस्म की क़ुदरती आसानी के ख़िलाफ़। **दो बार दोहराया गया: उठाना, और जना।** क़ुरआन इसे ख़ूबसूरत नहीं बनाता; **ये दर्द का नाम लेता है।** नौ महीने एक बदला हुआ जिस्म, और फिर दर्द का एक ऐसा मरहला जिसे ज़ुबान उठा नहीं सकती।

और 'तीस महीने' — उलमा ने इस आयत से, दो पूरे साल दूध पिलाने की आयत के साथ मिला कर, ये निकाला कि **हमल की कम से कम मुद्दत छह महीने है।** अली (रज़ि0) के बारे में मशहूर है कि उन्होंने ठीक यही दलील इस्तेमाल कर के **एक औरत को बचाया** जिस पर तोहमत लगी थी जब उसने छह महीने में बच्चा जना।

फिर आयत वक़्त में आगे बढ़ती है: 'हत्ता इज़ा बलग़ अशुद्दहू व बलग़ अर्बईन सनह — यहाँ तक कि जब वो अपनी **पूरी क़ुव्वत** को पहुँचे और **चालीस साल** को पहुँचे...'

बेटा, **चालीस** — पुख़्तगी की उम्र, जब एक शख़्स ने ज़िंदगी इतनी देख ली होती है कि उसे समझ सके। और पुख़्ता मोमिन चालीस पर क्या कहता है? अल्लाह उसकी दुआ दर्ज करते हैं, और ये क़ुरआन की सब से मुकम्मल दुआओं में से एक है:

'**रब्बि औज़िअ'नी अन अश्कुर नि'मतकल्-लती अन्'अम्त 'अलय्य व 'अला वालिदय्य** — **ऐ मेरे रब, मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी उस नेमत का शुक्र करूँ जो तूने मुझ पर और मेरे वालिदैन पर की** — **व अन अ'मल सालिहन तर्ज़ाहु** — और ये कि मैं वो नेक अमल करूँ जिसे तू **पसंद** करे — **व अस्लिह ली फ़ी

ज़ुर्रिय्यती** — और मेरे लिए मेरी **औलाद** में सुधार कर दे — **इन्नी तुब्तु इलैक व इन्नी मिनल्-मुस्लिमीन** — बेशक मैंने तेरी तरफ़ **तौबा** की, और बेशक मैं **फ़रमाँबरदारों** में से हूँ।'

बेटा, पहली दरख़्वास्त ग़ौर कीजिए: दौलत नहीं, सेहत नहीं — **शुक्र करने की तौफ़ीक़।** क्योंकि **शुक्र ख़ुद एक तोहफ़ा है जो अता करना पड़ता है।** और ग़ौर कीजिए वो **अपने वालिदैन** पर की गई नेमतों को भी गिना जाने को माँगता है — वो समझता है कि **उस में हर अच्छी चीज़ उन्हीं के ज़रिए आई।**

और फिर वो अपनी **औलाद** के लिए माँगता है — बेटा, ये एक मुकम्मल ज़ंजीर है: **पीछे शुक्र, आगे दुआ।** एक ही साँस में तीन नस्लें।

वो बेटा जिसने इनकार किया

और फिर, बेटा, इस ख़ूबसूरत तस्वीर के फ़ौरन बाद, क़ुरआन **उसका उल्टा** दिखाता है — वो बच्चा जो ठुकरा देता है।

'**वल्-लज़ी क़ाल लि-वालिदैहि उफ़्फ़िल्-लकुमा** — और वो जो अपने **वालिदैन** से कहता है: **तुम दोनों पर उफ़्फ़!** अ त'इदानिनी अन उख़रज व क़द ख़लतिल्-क़ुरूनु मिन क़ब्ली — क्या तुम मुझे ये **वादा** देते हो कि मैं (क़ब्र से) **निकाला** जाऊँगा, जब मुझ से पहले कई नस्लें गुज़र चुकी हैं?'

बेटा, '**उफ़्फ़**' — झुँझलाहट की वो छोटी सी आवाज़, **वही लफ़्ज़ जिसे अल्लाह ने सूरह अल-इसरा में मना किया।** यहाँ ये एक बेटे की तरफ़ से कहा जा रहा है जो अपने वालिदैन के ईमान का मज़ाक़ उड़ाता है।

और देखिए वालिदैन क्या करते हैं: '**व हुमा यस्तग़ीसानिल्लाह** — और वो दोनों **अल्लाह से फ़रयाद** करते हैं, (उससे कहते हुए): **वैलक आमिन** — तेरी ख़राबी हो! **ईमान ले आ!** **इन्न व'दल्लाहि हक़्क़** — बेशक, अल्लाह का वादा **सचा** है।'

बेटा, उस मंज़र को महसूस कीजिए: **दो मोमिन वालिदैन, अपने बेटे के लिए

अल्लाह से इल्तिजा करते और अपने बेटे से ईमान लाने की भीख माँगते।** और वो जवाब देता है: 'मा हाज़ा इल्ला असातीरुल्-अव्वलीन — ये तो बस अगले लोगों की कहानियाँ हैं।'

और बेटा, यहाँ एक अहम बात कहनी है। कुछ पहले उलमा ने इस हिस्से को एक ख़ास शख़्स से जोड़ा, जब कि दूसरे — और **आइशा (रज़ि0) ने इस निस्बत को मज़बूती से रद्द किया** — इस राय के थे कि ये **एक क़िस्म** को बयान करता है, किसी नाम-ज़द शख़्स को नहीं। अल्फ़ाज़ आम हैं, और इसे इसी तरह पढ़ना चाहिए: **हर उस बच्चे की तस्वीर जो अपने वालिदैन के ईमान का मज़ाक़ उड़ाता है।**

बेटा, और इन दो हिस्सों के एक दूसरे के पहलू में खड़े होने में **तसल्ली** है। कुछ वालिदैन सब कुछ देते हैं और **शुक्र** पाते हैं; कुछ सब कुछ देते हैं और **'उफ़्फ़'** पाते हैं। अगर आप एक ऐसे वालिद हैं जिसका बच्चा मुँह मोड़ गया — **आप क़ुरआन में हैं, और आपकी दुआ भी।** अल्लाह को यूँ पुकारते रहिए जैसे उन वालिदैन ने पुकारा। **और अगर आप एक बच्चे हैं — दोनों तस्वीरें पढ़िए और चुनिए कि आप कौन सी दर्ज करवाना चाहते हैं।**

वो बादल जो बारिश न था

और अब, बेटा, वो कहानी जो इस सूरह को उसका नाम देती है।

'**वज़्कुर अख़ा 'आद** — और **'आद के भाई** का **ज़िक्र** करो — **इज़ अन्ज़र क़ौमहू बिल्-अह्क़ाफ़** — जब उसने अपनी क़ौम को **अल-अहक़ाफ़ — रेत के टीलों** में — **ख़बरदार** किया।'

"आद का भाई नबी **हूद (अलैहि0)** हैं, बेटा। और 'अल-अहक़ाफ़' का मतलब है **टेढ़े, लहराते रेत के टीले** — जनूबी अरब का वो इलाक़ा जहाँ उनकी क़ौम रहती थी।

उन्होंने ख़बरदार किया: 'अल्ला त'बुदू इल्लल्लाह — अल्लाह के सिवा किसी की इबादत मत करो — **इन्नी अख़ाफ़ु 'अलैकुम** 'अज़ाब यौमिन 'अज़ीम — बेशक, मैं

तुम्हारे लिए एक होला देने वाले दिन के अज़ाब से **डरता** हूँ।'

बेटा, जुमला ग़ौर कीजिए: '**मैं तुम्हारे लिए डरता हूँ।**' *'मैं तुम्हें धमकी देता हूँ* नहीं। **अंबिया फ़िक्र से ख़बरदार करते**, उस तरह जैसे एक आदमी रेल की पटरी पर खड़े शख़्स पर चीख़ता है।

उनका जवाब: 'अ जि'तना लि-त'फ़िकना 'अन आलिहतिना — क्या तुम हमें हमारे ख़ुदाओं से **फेरने** आए हो? **फ़-'तिना बिमा त'इदुना इन कुन्त मिनस्-सादिक़ीन** — तो हमारे पास वो **ले आओ** जिसका तुम **वादा** करते हो, अगर तुम सच्चे हो!'

बेटा, **उन्होंने अज़ाब की माँग की।** जैसे लोग अक्सर करते हैं — *'अगर ये सच है, तो हो जाए'*। उसने कहा: 'इन्नमल्-'इल्मु 'इंदल्लाह — इल्म तो बस अल्लाह के पास है — व उबल्लिग़ुकुम मा उर्सिल्तु बिह — और मैं तुम्हें वो पहुँचाता हूँ जिसके साथ भेजा गया।'

और फिर, बेटा, वो लम्हा आता है — और ये क़ुरआन के सब से रोंगटे खड़े करने वाले मंज़रों में से एक है:

'**फ़-लम्मा र-औहु 'आरिज़म्-मुस्तक़्बिल औदियतिहिम क़ालू हाज़ा 'आरिज़ुम्-मुम्तिरुना** — फिर जब उन्होंने उसे एक **बादल** देखा अपनी **वादियों** की तरफ़ आता, तो बोले: **ये बादल हम पर बरसने वाला है!**'

बेटा, इसका तसव्वुर कीजिए। एक लंबी ख़ुश्कसाली, सूखी वादियाँ, एक सेहराई क़ौम — और फिर उफ़ुक़ पर एक बड़ा बादल ज़ाहिर होता है, उनकी तरफ़ आता हुआ। **वो अपने घरों से निकल आए, उन्होंने इशारा किया, उन्होंने ख़ुशी मनाई।** आख़िर-कार बारिश!

और अल्लाह जवाब देते हैं: '**बल हुव मस्त'जल्तुम बिह** — **बल्कि, ये वही है जिसे तुम जल्दी माँग रहे थे** — **रीहुन फ़ीहा 'अज़ाबुन अलीम** — एक **हवा**, जिसमें **दर्दनाक अज़ाब** है।'

'तुदम्मिरु कुल्ल शै-इम्-बि-अम्रि रब्बिहा — अपने रब के हुक्म से **हर चीज़** को **तबाह** करती हुई — फ़-अस्बहू ला युरा इल्ला मसाकिनुहुम — और सुबह तक उनके **घरों** के सिवा कुछ **नज़र न आता** था।'

बेटा, **रेत में खड़े ख़ाली घर।** अपने दौर के सब से ताक़तवर लोगों का बस इतना ही बाक़ी बचा।

और यही सबक़ है, बेटा, और ये भारी है: **वो अपनी ही तबाही पर मुस्कुराए। वो उसका इस्तक़बाल करने निकले।** जिसे वो आती हुई रहमत समझते थे **वो वो अज़ाब था जिसे उन्होंने ख़ुद माँगा था।**

तो होशियार रहिए कि आप **किस पर ख़ुशी मनाते हैं**, बेटा। वो मौक़ा जिस पर आप जश्न मना रहे हैं — **क्या वो बारिश है, या एक हवा?** वो पैसा, वो ताल्लुक़, वो आसान शॉर्ट-कट? **हम बादल को अज़ाब से पहचानने के क़ाबिल नहीं।**

इसी लिए नबी ﷺ, जब भी तेज़ हवा या जमा होते बादल देखते, अपने चेहरे पर **फ़िक्र** लाते और दुआ करते: '**अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक ख़ैरहा व ख़ैर मा फ़ीहा... व अ'ऊज़ु बिक मिन शर्रिहा**' — या अल्लाह, मैं तुझ से इसकी भलाई और उस में की भलाई माँगता हूँ, और इसकी बुराई से तेरी पनाह माँगता हूँ।

'**व लक़द मक्कन्नाहुम फ़ीमा इम्-मक्कन्नाकुम फ़ीह** — और हमने उन्हें उन चीज़ों में **जमाया** था जिन में हमने तुम्हें **नहीं** जमाया — व ज'अल्ना लहुम सम्'अंव्-व अब्सारंव्-व अफ़्इदह — और हमने उन्हें **कान** और **आँखें** और **दिल** दिए — **फ़-मा अग़ना 'अन्हुम सम्'उहुम व ला अब्सारुहुम व ला अफ़्इदतुहुम मिन शै-इन** — मगर उनके कान, आँखें और दिल उनके **कुछ काम न आए** — इज़ कानू यज्हदून बि-आयातिल्लाह — क्योंकि वो अल्लाह की निशानियों का **इनकार** करते थे।'

बेटा, **उनके पास हम से बेहतर सलाहियतें थीं और उन्होंने उन्हें इनकार के लिए इस्तेमाल किया। सलाहियतें उतनी ही अच्छी हैं जितनी उस चीज़ की जिस पर तुम उन्हें ताकते हो।**

जिन्नों ने सुना — और सब्र का हुक्म

फिर सूरह उस रात का ज़िक्र करती है जब **जिन्नों की एक जमाअत** ने नबी ﷺ को क़ुरआन पढ़ते सुना: 'फ़-लम्मा हज़रूहु क़ालू **अन्सितू** — जब वो हाज़िर हुए तो बोले: **ख़ामोश हो जाओ (सुनो)!** — फ़-लम्मा क़ुज़िय वल्लौ इला क़ौमिहिम मुन्ज़िरीन — और जब वो पूरा हुआ तो वो अपनी क़ौम की तरफ़ **डराने वाले** बन कर लौटे।'

बेटा, उनका पहला लफ़्ज़ '**अन्सितू**' था — ख़ामोश हो जाओ, ध्यान से सुनो। और उन्होंने जो सुना उसे उन्होंने बयान किया: 'हमने एक ऐसी किताब सुनी जो मूसा के बाद उतारी गई, अपने से पहले की तस्दीक़ करती हुई, **हक़ की तरफ़ और एक सीधे रास्ते की तरफ़ राह दिखाती हुई।**'

और फिर वो अपनी क़ौम से कहते हैं: '**या क़ौमना अजीबू दा'इयल्लाह** — ऐ हमारी क़ौम! **अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले की बात मान लो**, और उस पर ईमान लाओ — वो तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से बचा लेगा।'

बेटा, **वो एक ही महफ़िल में सुन कर दाई बन गए** — जब कि मक्का के सरदार सालों से सुन रहे थे और अब भी बहस कर रहे थे।

और फिर, सूरह के इख़्तिताम पर, नबी ﷺ के लिए वो हुक्म आता है जो पूरी सूरह पर मुहर लगा देता है:

'**फ़स्बिर कमा सबर उलुल्-'अज़्मि मिनर्-रुसुल** — **तो सब्र करो जैसा बुलंद-हिम्मत रसूलों ने सब्र किया** — **व ला तस्त'जिल्-लहुम** — और उनके लिए **जल्दी मत करो।**'

बेटा, '**उलुल-'अज़्म**' — पुख़्ता इरादे और बुलंद हिम्मत वाले रसूल; उलमा उन में नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा और ख़ुद मुहम्मद ﷺ को गिनते हैं। और नबी ﷺ से कहा जा रहा है: **उन्हें अपना नमूना बनाओ।**

और वो दूसरा हिस्सा — '**व ला तस्त'जिल्-लहुम**', उनके लिए जल्दी मत करो —

बेटा, ये उसी सूरह में है जिसमें 'आद ने **जल्दी माँगी** थी। **उन्होंने अज़ाब जल्दी माँगा और पा लिया। नबी ﷺ को कहा गया: तुम जल्दी मत माँगो।** क्योंकि हर वो दिन जो अल्लाह टालते हैं, वो किसी के लिए तौबा का एक और दरवाज़ा है।

'**क-अन्नहुम यौम यरौन मा यू'अदून लम यल्बसू इल्ला सा'अतम्-मिन नहार** — जिस दिन वो देखेंगे जिसका उन से वादा किया गया, (उन्हें लगेगा) कि वो **दिन की एक घड़ी** से ज़्यादा नहीं ठहरे। **बलाग़** — ये एक पैग़ाम है (पहुँचा दिया गया)।'

बेटा, वो आख़िरी लफ़्ज़ — '**बलाग़**' — बस इतना ही: पैग़ाम पहुँचा दिया गया। **अब जो सुनता है उसका काम है।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. जिसे भी पुकारें, ये सवाल पूछिए: 'मुझे दिखाओ उसने क्या बनाया?' — और अक़ीदे के लिए सबूत का मेयार रखिए: नाज़िल मतन या सनद वाला इल्म।

2. वालिदैन के साथ 'इह्सान' — सिर्फ़ इताअत नहीं; और माँ के हिस्से का दर्द क़ुरआन ने ख़ुद नाम ले कर लिखा: 'कुरहन... कुरहन'।

3. चालीस वाली दुआ याद कर लीजिए — पहली दरख़्वास्त **शुक्र करने की तौफ़ीक़** है, क्योंकि शुक्र ख़ुद एक अता है।

4. एक ही साँस में तीन नस्लें: पीछे वालिदैन का शुक्र, आगे औलाद की दुआ।

5. 'उफ़्फ़' वाली तस्वीर भी क़ुरआन में है — अगर आपका बच्चा मुँह मोड़ गया, तो आप और आपकी दुआ दोनों इस किताब में दर्ज हैं।

6. होशियार रहिए कि आप किस पर ख़ुशी मनाते हैं — 'आद अपनी ही तबाही का इस्तक़बाल करने निकले थे।

7. 'फ़स्बिर कमा सबर उलुल-'अज़्म' — और जल्दी मत माँगिए; हर टाला हुआ दिन किसी के लिए तौबा का दरवाज़ा है।

या अल्लाह, हमें अपने वालिदैन का शुक्र-गुज़ार बनाइए, हमारी औलाद में सुधार

फ़रमाइए, और हमें हर उस बादल से बचाइए जो रहमत लगे और अज़ाब हो। आमीन।